



NCERT Solutions for Class 6th Sanskrit : Chapter 13

पाठ का परिचय (Introduction of the Lesson)

प्रस्तुत पाठ में लोक कल्याण की कामना की गई है। पाठ में आए मंत्र, वेद, उपनिषद् एवं संस्कृत साहित्य से उद्धृत है। इनमें न केवल निजी बल्कि सब के मंगल की कामना की गई है।

पाठ – शब्दार्थ एवं सरलार्थ

(क) असतो मा सद्गमय।
तमसो मा ज्योतिर्गमय।
मृत्योर्मांश्मृतं गमय॥

शब्दार्थः (Word Meanings) : असतो (असतः) – अस्त् / बुराई से (from evil/badness), मा – मुझे (me), सद् (सत्) – सत्/अच्छाई (good/virtuous), तमसो (तमसः) – अंधकार/अज्ञान से (from darkness/ignorance), ज्योतिः – प्रकाश/ज्ञान (light/knowledge), गमय – ले चलो (take lead), मृत्योर्मांश्मृतम् (मृत्योः + मा + अमृतम्) – मृत्यु से अमरत्व को (from death; me to immortality)।

सरलार्थ :

(उपनिषद् के इस मंत्र में नकारात्मक दिशा से सकारात्मक दिशा में बढ़ने के लिए प्रार्थना की गई है।) हे परमात्मा! मुझे बुराई/असत्य से अच्छाई/सत्य की ओर ले चलो। मुझे अंधकार अथवा अज्ञान से प्रकाश अथवा ज्ञान की ओर ले चलो। मुझे मृत्यु से अमरत्व की ओर ले चलो।

English Translation:

(The said shloka is a prayer for progress from the negative into the positive. It is a wish for achievement of truth, knowledge and immortality.)

O Almighty, from evil please lead me into good and from darkness/ignorance kindly lead me into light/knowledge. From death kindly take me to immortality.

(ख) यथा द्यौश्च पृथिवी च न बिभीती न रिच्यतः।

एवं मे प्राण मा बिभेः॥

शब्दार्थः (Word Meanings) : द्यौश्च (द्यौः + च) – आकाश/अंतरिक्ष अथवा ध्रुलोक (sky/heaven), बिभीतः – डरते हैं (are afraid), रिच्यतः – दुःखी होते हैं (become unhappy), एवम् – इसी प्रकार (similarly), मे प्राण – हे मेरे प्राण! (O my life force), मा – मत (don't), बिभेः – डरो (fear), प्राण – प्राणशक्ति/चेतनशक्ति (vital force/consciousness)

* 'मा' के दो अर्थ हैं – (क) मुझे, (ख) मत।

LearnCBSE.in

सरलार्थ :

जिस प्रकार ध्रुलोक तथा पृथ्वी न डरते हैं, और न दुःखी होते हैं, उसी प्रकार हे मेरी प्राणशक्ति! तुम भी मत डरो।

प्रस्तुत मंत्र में जीवन की विषम परिस्थितियों में भी मनोबल तथा आत्मविश्वास बनाए रखने की प्रार्थना है। निर्भीकता की प्रेरणा है।

English Translation:

Just as the heaven/sky and the earth are neither afraid nor are they unhappy (anxious/depressed), in the same way O my life force, do not be afraid.

The said Mantra is a prayer for courage and confidence even when life presents difficult situations. It is a motivation for fearlessness.

(ग) यत् स्वप्ने अन्नमन्मामि न प्रातरधिगम्यते।

सर्वं तदस्तु मे शिवं नहि तद् दृश्यते दिवा॥

शब्दार्थः (Word Meanings) : यत् – जो (which), अन्नमि – खाता/खाती हूँ (eat/consume), अधिगम्यते (प्रातरधिगम्यते = प्रातः + अधिगम्यते) – प्राप्त होता है (is obtained), तदस्तु (तद् अस्तु) – वह हो (may that be), शिवम् – कल्याणकारी (auspicious, beneficial), दृश्यते – दिखाई देता/देती है (is seen), दिवा – दिन (में), (during) day।

सरलार्थ :

प्रस्तुत मंत्र में स्वप्न के सर्वविध कल्याण की कामना की गई है। जो तत्व अदृश्य हैं, जिनका हमें बोध नहीं, वे सब भी हमारे लिए शुभ हों।

जो मैं रात को अन्न खाता/खाती हूँ, वह सब मेरे लिए मंगलमय हो, जो दिन में दृष्टिगोचर नहीं होता। गुणकारी बन जाता है। वह सब मेरे लिए मंगलमय हो, जो दिन में दृष्टिगोचर नहीं होता।

English Translation:

That which I consume at night is not obtained/seen in the morning (but is giving nourishment to the body without my knowledge) All that which is not visible during day may be beneficial to me.

May good fortune come from even those sources that are not known to us.

(घ) सर्वस्तरतु दुर्गाणि सर्वो भद्राणि पश्यतु।

सर्वः कामानवाप्नोतु सर्वः सर्वत्र नन्दतु॥

शब्दार्थः (Word Meanings) : तरतु – पार करे (may cross), दुर्गाणि – कठिनाइयाँ (difficulties), सर्वः – सब (everyone), भद्राणि – अच्छी कल्याणकारी स्थितियाँ (good things), पश्यतु – देखें (may see), आवाप्नोतु – पाएँ (may achieve), कामान् – इच्छाएँ (desire), नन्दतु – खुश होएँ (may rejoice)।

सरलार्थ :

सब लोग कठिनाइयों को पार करें। सब कल्याणकारी स्थितियाँ देखें, सब की इच्छाएँ पूरी हों; सभी सब जगह खुश हों।

इस श्लोक में प्रार्थना की गई है कि सबकी कामना पूरी हो, कष्ट दूर हो, सब सुखी प्रसन्न हों।

संस्कृत-VI

LearnCBSE.in

English Translation:**LearnCBSE.in**

May everyone overcome difficulties/problems! May everyone see/find good things!

May everyone achieve their desires! May everyone rejoice!

In this Shloka prayer, is done for everyone's well being and happiness.

● अभ्यास: (Exercise) ●**प्रश्न: 1. उच्चारणं कुरुत-** (उच्चारण कीजिए- Read it out.)

ज्योतिर्मय	दोश्च	अन्नमशनामि
प्रातरधिगम्यते	सर्वस्तरतु	दुर्गाणि
बृहदारण्यकोपनिषद्	कामानवाप्नोतु	भद्राणि

उत्तरम्- छात्र स्वयं उच्चारण करे।**प्रश्न: 2. सर्वान् मन्त्रान् श्लोकं च सस्वरं गायत।** (सब मन्त्रों व श्लोक को लय में गाइए- Recite the hymns (मन्त्रऽ) and the shloka in tune.)**उत्तरम्-** छात्र मंत्रों को सस्वर गाए।**प्रश्न: 3. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत-** (निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए- Answer the following questions.)

- (क) दुर्गाणि कः तरतु?
 (ख) सर्वत्र कः नन्दतु?
 (ग) कौ न विधीतः?
 (घ) असतो मा कुरु गमय?

उत्तरम्- (क) दुर्गाणि सर्वः तरतु।

- (ख) सर्वः सर्वत्र नन्दतु।
 (ग) द्यौः च पृथिवी च न विधीतः।
 (घ) असतो मा सद् गमय।

प्रश्न: 4. उदाहरणानुसारं पदानि रचयत- (उदाहरणानुसार पद लिखिए- Write down the words according to the example.)

लोडलकारः	लटलकारः	लोटलकारः	लृटलकारः
तरतु	तरति	क्रौडतु
पश्यतु	हसतु
नन्दतु	आनयतु
नृत्यतु	नयतु
अस्तु	धावतु
गच्छतु	लिखतु

उत्तरम्- क्रौडति, पश्यति, हसति, नंदति, आनयति, नृत्यति, नयति, अस्ति, धावति, गच्छति, लिखति।**LearnCBSE.in**

लोकमङ्गलम्

प्रश्न: 5. विलोमपदानि योजयत- (विलोम पद चुनकर जोड़िए- Match the antonyms.)

क	ख
प्रातः	सर्वत्र
दिवा	स्वप्ने
जागरणे	सायम्
एकत्र	ज्योतिः
तमः	रात्रिः

उत्तरम्- प्रातः - सायम्; दिवा - रात्रि; जागरणे - स्वप्ने; एकत्र - सर्वत्र; तमः - ज्योतिः।**प्रश्न: 6. मञ्जूषातः उचितम् अव्ययपदं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत-** (मञ्जूषा से उचित अव्ययपद चुनकर रिक्त स्थान भरिए- Pick out the appropriate indeclinable from the box and fill in the blanks.)

न	च	यथा	एव	मा
---	---	-----	----	----

- (क) देशः तथा वेषः।
 (ख) माता पिता शिशून् पालयतः।
 (ग) श्रम जयते।
 (घ) महात्मा गाँधी सत्यं अत्यजत्।
 (ङ) गर्व कुरु।

उत्तरम्- (क) यथा (ख) च (ग) एव (घ) न (ङ) मा**अतिरिक्त-अभ्यासः****(1) पद्यांश पठित्वा अधोवृत्तान् प्रश्नान् उत्तरत-** (पद्यांश पढ़ कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए- Read the extract and answer the following questions.)

सर्वस्तरतु दुर्गाणि सर्वो भद्राणि पश्यतु।

सर्वः कामानवाप्नोतु सर्वः सर्वत्र नन्दतु॥

I. एकपदेन उत्तरत-

- (i) सर्वः कानि पश्यतु?
 (ii) सर्वः सर्वत्र किं करोतु?

उत्तरम्- (i) भद्राणि। (ii) नन्दतु।**LearnCBSE.in**

संस्कृत-VI

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत-

- (i) सर्वः कान् आप्नोतु?
(ii) कः दुर्गाणि तरतु?

उत्तरम्- (i) सर्वः कामान् आप्नोतु। (ii) सर्वः दुर्गाणि तरतु।

III. भाषिककार्यम्-

1. वाक्यं बहुवचने परिवर्ततः यथा-

- (i) सर्वः पश्यतु। (ए०व०) सर्वे पश्यन्तु। (बहुवचन)
(ii) सर्वः नन्दतु। (बहुवचन)
(iii) सर्वः तरतु। (बहुवचन)

उत्तरम्- (ii) सर्वे नन्दन्तु। (iii) सर्वे तरन्तु।

2. लकार परिवर्तनं कुरुतः यथा-

सर्वः कामान् आप्नोतु। (लोट्) सर्वः कामान् आप्नोति। (लट्)

- (i) सर्वः दुर्गाणि तरतु।
(ii) सर्वः भद्राणि पश्यतु।

उत्तरम्- (i) सर्वः दुर्गाणि तरति।

(ii) सर्वः भद्राणि पश्यति।

(3) मंत्रपूर्तिं कुरुतः। (मंत्र पूरा कीजिए। Complete the Mantra.)

- (i) असतो मा गमय।
(ii) मा ज्योतिर्गमय।
(iii) माऽमृतं गमय।

उत्तरम्- (i) सद्। (ii) तमसो। (iii) मृत्योः।

बहुविकल्पीयप्रश्नः

(1) उचितेन विकल्पेन रिक्तस्थानानि पूरयत। (उचित विकल्प द्वारा रिक्त स्थान भरिए। Fill in the blanks with the correct option.)

- (i) एव मे प्राण विधेः। (न, मा, च)
(ii) सर्वे तदस्तु मे। (अन्नम्, स्वप्नम्, शिवम्)
(iii) सर्वे नन्दतु। (सर्वत्र, तत्र, यत्र)
(iv) सर्वः तरतु। (भद्राणि, कार्याणि, दुर्गाणि)
(v) मा ज्योतिर्गमय। (असतो, तमसो, मृत्योः)

उत्तरम्- (i) मा, (ii) शिवम्, (iii) सर्वत्र, (iv) दुर्गाणि, (v) तमसो।

□□□